

# विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

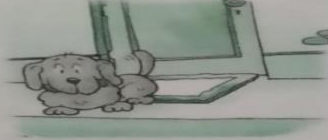
विषय संस्कृत दिनांक 20-06-2021

वर्ग अष्टम शिक्षक -राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित



पुत्रः पितरम् विना गच्छति।  
(पुत्र पिता के बिना जाता है।)  
(‘विना’ के कारण ‘पितृ’  
शब्द में द्वितीया)



कुक्कुरः गृहं रक्षति।  
(कुत्ता घर की रक्षा करता है।)  
(‘रक्ष्’ के कारण ‘गृह’  
शब्द में द्वितीया)



पृथ्वीं परितः जलम् अस्ति।  
(पृथ्वी के चारों ओर जल है।)  
(‘परितः’ के कारण ‘पृथ्वी’  
शब्द में द्वितीया)



मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति।  
(मार्ग के दोनों ओर वृक्ष हैं।)  
(‘उभयतः’ के कारण ‘मार्ग’  
शब्द में द्वितीया)



पुत्रः पितरम् अनुसरति।  
(पुत्र पिता के पीछे चलता है।)  
(‘अनु’ के कारण ‘पितृ’  
शब्द में द्वितीया)



मातरं पितरम् अभितः बालकाः सन्ति।  
(माता-पिता के दोनों ओर बालक हैं।)  
(‘अभितः’ के कारण ‘मातृ-पितृ’  
शब्दों में द्वितीया)

## करणकारकः ( तृतीया विभक्तिः )

जो शब्द क्रिया के होने में सहायक होते हैं, उन्हें करण कारक कहते हैं। अर्थात् जिसके माध्यम से क्रिया संपन्न होती है, उसमें करण कारक होता है और वहाँ तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। इसका चिह्न ‘से’ या ‘के द्वारा’ होता है। इनका प्रयोग तीनों लिंगों एवं तीनों वचनों में होता है।

### पुल्लिङ्गे



सः मुखेन खादति।  
(वह मुख से खाता है।)



बालकः पादाभ्याम् चलति।  
(बालक दो पैरों से चलता है।)



मृगः पादैः तीव्रं धावति।  
(हिरण पैरों से तेज दौड़ता है।)

## स्त्रीलिङ्गे



बालकः द्विचक्रिकया गृहं गच्छति।  
(बालक साइकिल से घर जाता है)



गृहं लताभ्याम् शोभते।  
(घर दो लता से सुशोभित होता है।)



सः मालाभिः शोभते।  
(वह मालाओं से सुशोभित होता है।)

## नपुंसकलिङ्गे

तृतीया से सम्बोधन पर्यन्त रूप पुल्लिङ्ग की तरह होते हैं।

**तृतीया-विभक्तेः विशिष्टप्रयोगः ( उपपदविभक्तिः )**



विनयः रमया सह खेलति।  
(विनय रमा के साथ खेलता है।)  
(‘सह’ के कारण ‘रमा’ शब्द में तृतीया)



सः पादेन खञ्जः अस्ति।  
(वह पैर से लँगड़ा है।)  
(‘अङ्गविकार’ के कारण ‘पाद’ शब्द में तृतीया)



सः नेत्रेण काणः।  
(वह नेत्र से काना है।)  
(‘अङ्गविकार’ के कारण ‘नेत्र’ शब्द में तृतीया)



बालकः पित्रा समम् अस्ति।  
(बालक पिता के समान है।)  
(‘समम्’ के कारण ‘पितृ’ शब्द में तृतीया)



सः चक्षुर्भ्याम् अन्धः।  
(वह आँखों से अन्धा है।)  
(‘अङ्गविकार’ के कारण ‘चक्षु’ शब्द में तृतीया)



कन्या मात्रा सदृशः।  
(कन्या माता के जैसी है।)  
(‘सदृश’ के कारण ‘मातृ’ शब्द में तृतीया)





अलम् कलहेन।  
(झगड़ा मत करो)

('अलम्' के कारण 'कलह' शब्द में तृतीया)



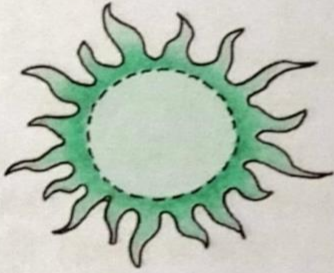
परिश्रमेण विना कुतः विद्या?  
(परिश्रम के बिना विद्या कहाँ?)

('विना' के कारण 'परिश्रम' शब्द में तृतीया)

### सम्प्रदानकारकः (चतुर्थी विभक्तिः)

जिसके लिए क्रिया की जाती है, उस शब्द में सम्प्रदान कारक होता है और चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। इसका चिह्न 'को' या 'के लिए' होता है। इनका प्रयोग भी तीनों लिंगों एवं तीनों वचनों में होता है।

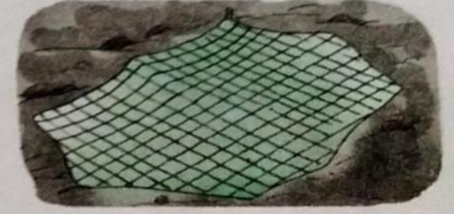
#### पुल्लिङ्गे



सूर्यः प्रकाशाय भवति।  
(सूर्य प्रकाश के लिए होता है।)



एते आभूषणे हस्ताभ्याम् स्तः।  
(ये दो आभूषण दोनों हाथों के लिए हैं।)



एतद् जालं खगेभ्यः अस्ति।  
(यह जाल पक्षियों के लिए है।)

#### स्त्रीलिङ्गे



एतत् फलं बालिकायै अस्ति।  
(यह फल बालिका के लिए है।)



एतद् भोजनं महिलाभ्याम् अस्ति।  
(यह भोजन दो महिलाओं के लिए है।)



एतानि पुष्पाणि मालाभ्यः सन्ति।  
(ये मालाओं के लिए फूल हैं।)



